


सलोकु ॥
निरगुनीआर इआनिआ
सो प्रभु सदा समालि ॥
जिनि कीआ तिसु चीति
रखु नानक निबही नालि ॥4॥





असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥

कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥

जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥

गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥

बार बिबसथा तुझहि पिआरै दूध ॥

भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥


बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥

मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥

इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥

बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥





जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥

सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥

जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥

सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥

जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥


सगल समग्री संगि साथि बसा ॥


दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥

तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥


ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥


नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥







आदि अंति जो राखनहारु ॥
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥
जा की सेवा नव निधि पावै ॥
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥
नानक राखनहारु अपारु ॥३॥







रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥
जो होवनु सो दूरि परानै ॥
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥
संगि सहाई तिसु परहरै ॥
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥







करतूति पसू की मानस जाति ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥





सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥
कह पिंगुल परबत पर भवन ॥
नही होत ऊहा उसु गवन ॥
करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥
नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥





संगि सहाई सु आवै न चीति ॥

जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥

बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥

अनद केल माइआ रंगि रसै ॥

द्रिडु करि मानै मनहि प्रतीति ॥

कालु न आवै मूड़े चीति ॥


बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥

झूठ बिकार महा लोभ धोह ॥

इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥

नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥





तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥
तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥
तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

